ISSN 2454-5163

26 जुलाई 2021, मूल्य 2 रुपये, वर्ष 40, अंक 01, कुल पृष्ठ 36

वीतराग-विज्ञान

(पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का मुखपत्र)

सम्पादक :
डॉ. हुकमचंद भारिल्ल

आचार्यकल्प पण्डित प्रवर टोडरमल जी प्रवचन कक्ष, जौहरी बाजार, जयपुर

वीतराग-विज्ञान (456)

हिन्दी, मराठी व कन्नड़ भाषा में प्रकाशित

जैनसमाज का सर्वाधिक बिक्रीवाला आध्यात्मिक मासिक

सम्पादक :
डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

सह-सम्पादक :
डॉ. संजीवकुमार गोधा

प्रकाशक एवं मुद्रक :
ब्र. यशपाल जैन द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये जयपुर प्रिण्टर्स प्रा. लि., जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पर्क-सूत्र :
पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-mail : ptstjaipur67@gmail.com

ISSN 2454 - 5163

शुल्क :

आजीवन	:	251 रुपये
वार्षिक	:	25 रुपये
एक प्रति	:	2 रुपये

मुद्रण संख्या :

हिन्दी	:	7000
मराठी	:	2000
कन्नड़	:	1000
कुल	:	**10000**

स्वतंत्रता का उद्घोष

जैनदर्शन केवल न जन-जन की स्वतंत्रता की बात कहता है, बल्कि यह तो कण-कण की स्वतंत्रता का उद्घोष करता है। दो द्रव्य या दो वस्तुयें सर्वथा भिन्न-भिन्न ही हैं, प्रदेशभेद वाली ही हैं। दोनों एक होकर एक परिणाम को उत्पन्न नहीं करतीं और उनकी एक क्रिया नहीं होती। यदि दो द्रव्य एक होकर परिणमित हों तो सर्व द्रव्यों का लोप हो जाये।

एक द्रव्य के दो कर्त्ता नहीं होते और दो द्रव्य मिल एकमेक नहीं करते तथा एक द्रव्य की दो क्रियायें नहीं होती; क्योंकि एक द्रव्य अनेकरूप नहीं होता। जो वस्तु जिस द्रव्य के रूप में और गुण के रूप में वर्तती है, वह अन्य द्रव्य के रूप में तथा अन्य गुण के रूप में संक्रमित नहीं होती। और स्वयं अन्य रूप से संक्रमण को प्राप्त न होती हुई वह अन्य वस्तु का परिणमन कैसे करा सकती है?

– अध्यात्म रत्नाकर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का, घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : ४० (वीर नि. संवत् २५४७) ४५६/अंक : १

सो देवन को देव

जगत में सो देवन को देव..।
जासु चरन परसें इन्द्रादिक, होय मुकति स्वयमेव।।टेक।।

जो न क्षुधित, न तृषित भयाकुल, इन्द्रीविषय न वेव।
जनम न होय, जरा नहिं व्यापै, मिटी मरण की टेव।
जगत में सो देवन को देव।।१।।

जाके नहिं विषाद, नहिं विस्मय, नहिं आठों अहमेव।
राग-विरोध मोह नहिं जाके, नहिं निद्रा परसेव।
जगत में सो देवन को देव।।२।।

नहिं तन रोग, न श्रम, नहिं चिंता, दोष अठारह भेव।
मिटे सहज जाके ता प्रभु की, करत 'बनारसी' सेव।
जगत में सो देवन को देव।।१।।

– कविवर पण्डित बनारसीदास : बनारसीविलास

स्व के विस्मरण से संसार, पर के विस्मरण से मुक्ति

स्व के विस्मरण से संसार है और पर के विस्मरण से मुक्ति है। अपने निरुपाधि अविकारी स्वभाव के विस्मरण में संसार है और निर्दोष चैतन्य स्वभाव के स्मरण से मुक्ति का नाथ होता है। अपना स्वरूप ध्रुव ज्ञायक है, उसके सन्मुख परिणाम झुकाने में जरा भी क्लेश नहीं है।

वे परिणाम कौन करे? उसका समाधान करते हैं, आत्मस्वभाव के आनन्द के प्रकाश की बात संक्षेप सूत्रों से करते हैं –

अनादि काल से यह जीव अविद्या (मिथ्यात्व) में पड़ा है। जैसा अपना स्वभाव है, उसकी संभाल न करके इसने राग की संभाल की है; अत: अविद्या कहा है। ज्ञानानन्द स्वभाव जो अस्तित्वमयी वस्तु है, उसे भूलकर क्षणिक विकार को अपना मान बैठा है। जैसे सूत में गांठ पडे, वैसे चिदानन्द आनन्दकन्द को भूलकर पुण्य-पाप के परिणामों के साथ एकत्व की गांठ पडी है। अपना एकत्व भूलकर विकार, व्यवहार और विकल्पों को अपना मानकर एकपने के संधि की प्रतीति कर रहा है।

जैसे अफीम के अमल में चढा हुआ पुरुष दु:ख पाता है; किन्तु छूट नहीं सकता, क्योंकि नशा बहुत चढा है, उसको अफीम के बिना चलता नहीं। इसकारण तलब लगने पर वह अफीम ले ही लेता है। वैसे ही यह जीव मोह से बंधा है। आत्मा ज्ञानस्वभावी होने पर भी पर में बंध रहा है। मोह से छूटने में सुख है तथापि छूटता नहीं, अन्तर स्वभाव की रुचि नहीं करता।

स्वाश्रित वह निश्चय और पराश्रित वह व्यवहार है; किन्तु इसका जिसे विवेक नहीं, वह अज्ञानी है। अज्ञानी जीव व्यवहार से धर्म मानते है और निश्चय मानने से एकान्त होगा – ऐसा कहते है। देव की पूजा से समकित होता है, शास्त्र से ज्ञान होता है और गुरु-भक्ति से चारित्र होता है –ऐसा अज्ञानी जीव मानते है, किन्तु यह सब अज्ञानभाव है। आत्मा की प्रतीतिपूर्वक उसमें स्थिरता करें तो चारित्र होता है। – अनुभवप्रकाश प्रवचन, पृष्ठ : ६

सम्पादकीय

भरत का अन्तर्द्वन्द

दसवाँ अध्याय

(गतांक से आगे ...)

(दोहा)

वृषभसेन की शरण में, बैठे थे भरतेश।
समाचार आया तभी, मुक्त हुये वृषभेश।।१।।

ऋषभदेव मुक्ति गये, भरत शोक सन्तप्त।
वृषभसेन समझा रहे, नहीं शोक उपयुक्त।।२।।

तुमसे ज्ञानी जीव को, अच्छा लगे न शोक।
तुम स्वभाव से ही सहज, तुम हो सहज अशोक।।३।।

(रेखता)

भरत ! तुम सभी जानते हो भरत ! तुम सम्यग्ज्ञानी हो।
मोक्ष में जाने वालों का इसतरह शोक नहीं करते।।
सम्भालो होश ज्ञानिजन तो इसतरह होश नहीं खोते।
और मूर्छित होकर के वे कभी बेहोश नहीं होते ।।४।।

हो गया अरे कौन सा गजब अरे यह तो होना ही था।
अरे उनका होना है मोक्ष यह हम सभी जानते थे।।
अरे तुमने दुनियाँ देखी और तुम सम्यग्दृष्टी हो।
और तुम चरमशरीरी हो मोक्ष में जाने वाले हो ।।५।।

आज क्यों विह्वल होते हो ? आज तुम धीरज मत खोओ।
आज तक धीरज खोया नहीं, आज क्यों धीरज खोते हो?।।
तुम्हें तो स्वयं समझना है और सबको समझाना है।
भरत तुम शान्त रहो भाई ! और धीरज रख कर सोचो ।।६।।

अरे अब समय तुम्हारा भी सहज ही आया समझो बन्धु!।
समय पर दीक्षा लेने की बात तुम भी सोचो अविलम्ब।।
प्रभु श्री ऋषभदेव तो गये प्रेरणा लोगे अब किससे।
तुम्हें तो स्वयं सोचना है स्वयं सब निर्णय करना है ।।७।।

तुम तो समझदार हो स्वयं अधिक क्या तुमसे कह सकता ?।
समय जाता है तेजी से नहीं वह रोके से रुकता।।
और इस मानव जीवन का अरे अधिकांश भाग तो गया।
क्षणिक इस मानव जीवन का केवल अंशमात्र रह गया ।।८।।

(विष्णु)[१]

चले गये सब लोग आप घर में ही उलझे हैं ।
जन-जन में उलझे रहे आप अबतक ना सुलझे हैं।।
सब लोग गये पर आप देशसेवा में उलझे हैं।
सब आतमहित में लगे आप अबतक ना सुलझे हैं।।९।।

परम सत्य यह बात भरत के अन्तर में चुभ गई ।
वृषभसेन की बात भरत के अन्तर में लग गई ।।
लगे सोचने भरत मुझे आतम अपनाना है।
छोड़ जगत के कार्य मुझे अन्तर में जाना है।।१०।।

---

१. कहाँ गये चक्री जिन जीता..... की लय पर गायें।

वृषभसेन की समझाहट से भरत हुये गम्भीर।
और रातभर रहे सोचते भवसागर के तीर।।
जाना है अतिशीघ्र मिटाना है इस भव की पीर।
चिन्तन में चढ़ गये भरतजी धीर-वीर-गम्भीर ।।११।।

सूर्योदय के होते ही सबको बुलवाया है।
दीक्षा लेने के भाव हुये सबको बतलाया है।।
अर्ककीर्ति को आदिराज को सब समझाया है।
अर्ककीर्ति को राजतिलक कर पास बुलाया है ।।१२।।

आदिराज को अरे सुनो युवराज बनाया है।
और सभी को यथायोग्य सब काम बताया है।।
सबको कर सन्तुष्ट भरतजी स्वयं साधु हो गये।
अन्तर में ही मग्न भरतजी अपने में रम गये ।।१३।।

अपने में रम गये भरतजी अपने में जम गये।
अपनेपन के साथ अपन में रमे, रमे सो रमे।।
अपनेपन के साथ अपन में जमे, जमे सो जमे।
समाधिस्थ हो गये समाये आतम में ही रहे ।।१४।।

मुनि होने के बाद भुजबलि खड़े-खड़े ही रहे।
शुद्धोपयोग में गये किन्तु दो घड़ी[१] नहीं रुक सके।।
बन न सके सर्वज्ञ ध्यान में बारह माह लगे।
बारह माह के बाद हि वे केवलज्ञानी बन सके ।।१५।।

१. घड़ी माने २४ मिनट। एक मुहूर्त दो घड़ी का होता है।

प्रथम जिनेश्वर ऋषभदेव को सहस्त्र वर्ष थे लगे।
केवलज्ञानी होने में यह सभी जानते हैं।।
किन्तु प्रभु भरतेश्वर तो अन्तरमुहूर्त्त में ही।
केवलज्ञानी हुये जगत जन उन्हें देखते रहे।।१६।।

पौरुष के वे पिण्ड भरत जब जिस कारज में लगे।
सफल सदा ही रहे कहीं भी असफल वे न रहे।।
उन्हें बड़ी से बड़ी समस्या विचलित ना कर सकी।
शान्तभाव से धीरज से वे सभी निबटती रहीं ।।१७।।

आतम के अनुभवी जनम से जबतक घर में रहे।
भरपूर अपरिमित भोगों के भी बीच अलिप्त रहे।।
सबके होकर, नहीं किसी के, वे अपने में रहे।
अविरत सम्यग्दृष्टि नाम के गुणथानक में रहे ।।१८।।

(रेखता)

रहे जब वे भोगों के बीच भोग भोगे थे उनने खूब।
और पाया था केवलज्ञान मात्र दो ही घड़ियों के बीच।।
रहे थे भोगों में भी टॉप योग में भी थे वे ही टॉप।
वे तो सदा टॉप पर रहे कभी भी आगे-पीछे नहीं ।।१९।।

भरतजी सदा टॉप पर रहे सभी कामों में आगे रहे।
भोग में भी वे आगे रहे योग में भी वे आगे रहे।।
सदा जो रहें कर्म में शूर धर्म में भी वे रहते शूर। [१]
भरतजी उनमें से ही थे सभी कामों में थे भरपूर ।।२०।।

१. जे कम्मे सूरा, ते धम्मे सूरा

उन्होंने राजकाज के साथ भोग भी भोगे थे चिरकाल।
अरे शुद्धोपयोग में किन्तु सफलता पाई थी तत्काल।।
भले ही राजकाज सब किये आतमा के ही साधक थे।
और अपने श्रावकपन में आतमा के आराधक थे ।।२१।।

अरे जिनके होते हैं सूक्ष्म अरे रे योग और उपयोग।
सहज ही होता है एकाग्र होने की क्षमता का संयोग।।
सफल होते हैं वे सर्वत्र कहीं भी असफल ना होवें।
निशाना हो अचूक ही सदा कहीं भी क्यों न लगावे वे।।२२।।

अरे स्थिर थे उनके योग और अत्यन्त सूक्ष्म उपयोग।
भरत थे घर में ही योगी और था उपयोगी उपयोग।।
अरे दोनों ही वश में रहे उनके योग और उपयोग।
अधिक क्या कहें बताओ उन्हें मिला था यह अद्भुत संयोग।।२३।।

अतः वे दुनियादारी में सदा ही अव्वल आते रहे।
आतमा में भी जब वे जमे तब वे जमे-रमे ही रहे।।
अरे दुनियाँ तो करती रही राग वे पूर्ण राग त्यागी।
अरे वे बन करके भगवान बने सर्वज्ञ-वीतरागी ।।२४।।

अरे अन्तर्द्वन्द्वों के बीच अभी तक उलझे थे भरतेश।
किन्तु अब सब द्वन्द्वों से पार हो गये हैं जिनवर भरतेश।।
अरे रे दिव्यध्वनि द्वारा सदा होता उनका उपदेश।
सहज ही समझाते सब बात नहीं देते कोई आदेश ।।२५।।

अरे भगवान भरत ने कही एक आतम अनुभव की बात।
बताई सारी दुनियाँ को अकर्त्तापन की अद्भुत बात।।
अनन्ते द्रव्य जगत में हैं किसी का कोई कुछ ना करे।
सभी अपने-अपने कर्त्ता सभी अपने को ही भोगें ।।२६।।

सभी हैं न्यारे-न्यारे द्रव्य किसी का ना है कोई भाई।
सभी हैं अपने में परिपूर्ण किसी में नहीं कमी कोई।।
अरे रे परद्रव्यों से लेन-देन की बात गुलामी है।
अरे रे सभी द्रव्य स्वाधीन स्वयं के ही सब स्वामी हैं ।।२७।।

अरे है यह निश्चय की बात न इसमें कुछ भी संशय है।
यही है परम सत्य परमार्थ भरतजी ने बतलायी है।।
अरे रे यही एक भूतार्थ और सब अभूतार्थ जानो।
कथन जो कुछ भी आता हो सभी व्यवहार कथन मानो।।२८।।

आत्मा को जानो हे भव्य उसी में अपनापन तुम करो।
उसी का ज्ञान उसी का ध्यान नित्य उसमें ही तुम रत रहो।।
अनन्तानन्त गुणों का पिण्ड ज्ञान आनन्द स्वभावी है।
उसमें हैं असंख्यपरदेश[1] किन्तु वह तो अखण्ड ही है।।२९।।

देह में रहे देह से भिन्न अरे यह अरस अरूप अगन्ध।
अरे भगवान आतमा का नहीं पर से कुछ भी सम्बन्ध।।
यद्यपि इसमें उपजे राग किन्तु यह रागरूप है नहीं।
अरे यह ज्ञानानन्द स्वभाव किन्तु गुणभेद रूप है नहीं ।।३०।।

१. असंख्यप्रदेश

(विष्णु)

परमशुद्धनिश्चयनय का जो विषय आतमा है।
श्रद्धा का श्रद्धेय ध्यान का ध्येय आतमा है।।
पर्यायों से पार ज्ञान-आनन्द स्वभावी है।
परम पारणमिकभाव स्वयं चैतन्य स्वभावी है ।।३१।।

उसमें ही अपनापन निश्चय सम्यग्दर्शन है।
निजरूप जानना ज्ञान आतमा का अभिनन्दन है।।
अरे उसी में जमना-रमना और समा जाना।
लीन और तल्लीन यही है ध्यान आतमा का ।।३२।।

अपनेपन के साथ निरन्तर सहज स्वयं को ही।
सहजभाव से बिन तनाव के नित्य निरन्तर ही।।
निर्विकल्प हो सहज जानते रहना अनुभव है।
यही ज्ञान है यही ध्यान है यही समाधी है।। ३३।।

यह ही है शुद्धोपयोग यह अन्तर्मुख वृत्ति।
यह ही है संसारजाल से पूरी निरवृत्ति।।
यह ही है निश्चय मुक्तिमार्ग यह निश्चय मुक्ती है।
इसे छोडकर इस जग में ना कोई मुक्ति है।। ३४।।

सहजभाव से ही होते हैं ज्ञान-ध्यान-श्रद्धान।
रे तनाव का काम नहीं है और ना आकुलता।।
शान्तभाव ही परम धरम है शान्तभाव जीवन।
शान्तचित्त[१] को सभी एक से जीवन और मरन ।।३५।।

१. जिसका चित्त शान्त है, ऐसे सम्यग्दृष्टि जीव को

हे भव्य! ध्यान से सुनो सहज जीवन ही समता है।
करने-धरने के विकल्प ही बड़ी विषमता है।।
जो कुछ होता शान्तभाव से हमें जानना है।
जानन-देखन हारा हूँ - बस यही मानना है ।।३६।।

कुछ भी करना नहीं बोलना और सोचना नहीं।
निर्विकल्प हो शान्तभाव से सहज जानना सही।।
अगर दो घड़ी शान्तभाव से ऐसे ही रह सकें।
होगा केवलज्ञान सुनिश्चित सहज जानते रहें ।।३७।।

बस सहज जानते रहना है कुछ और नहीं करना।
अपने में ही जमना रमना कुछ और नहीं करना।।
कुछ विकल्प ना करना है बस निर्विकल्प रहना।
इतना ही मुक्तिमारग है अर मुक्ति भी इतनी ।।३८।।

भरत जिनेश्वर ने जग को मुक्तिमग बतलाया।
बस लगातार अन्तर्मुहूर्त्त तक अन्तर में रहना।।
यदि लगातार अन्तर्मुहूर्त्त तक अन्तर में न रहे।
तो केवलज्ञान नहीं होगा चाहे जो कुछ कर लो।।३९।।

और अकर्त्ताभाव बिना आतम अनुभव करना।
सम्भव होता नहीं भरत जिनवर का यह कहना।।
जो कुछ होना सब नक्की वह बदल नहीं सकता।
ऐसा माने बिना अकर्त्ताभाव नहीं होता ।।४०।।

और अकर्त्ताभाव बिना शुद्धोपयोग न हो।
शुद्धोपयोग के बिना कर्म का नाश नहीं होता।।
अगर घातिया नष्ट ना हों तो केवलज्ञान न हो।
और केवली हुये बिना अरहन्त नहीं होते ।।४१।।

तथा केवली होने से अरहन्त हो गये हैं।
परम वीतरागी जिनेन्द्र सर्वज्ञ हो गये हैं।।
हित-उपदेशक भरतराज भगवन्त हो गये हैं।
अनन्त चतुष्टय के धारक जयवन्त हो गये हैं ।।४२।।

अरे अघाती करम भरत के नष्ट हो गये हैं।
इस कारण भरतेश सिद्ध भगवन्त हो गये हैं।।
अरे अनन्तानन्त परमसुख का आवेगा पूर।
और अनन्तानन्त काल तक भोगेंगे भरपूर ।।४३।।

मुक्ति गये भरतेश उन्हें हम वन्दन करते हैं।
उनके गृहस्थ जीवन का हम अभिनन्दन करते हैं।।
वे विवेक के धनी उन्हीं के मग पर चलते हैं।
वे रहे निरन्तर शान्त उन्हें अभिवादन करते हैं।।४४।।

(रेखता)

अरे वे जब तक घर में रहे मानो रहे ना रहे एक।
निरन्तर आतम में ही रहे उसे न भूले वे क्षण एक।।
सभी के प्रति अपने कर्त्तव्य निभाते रहे निरन्तर वे।
किन्तु अपने को भूले नहीं स्वयं में डूबे रहे सदैव।। ४५।।

स्वयं में डूबे रहे सदैव इसी से थे इकदम तैयार।
उन्होंने दीक्षा ली तत्काल एक अन्तर्मुहूर्त में ही।।
हो गया उनको केवलज्ञान उन्होंने सारा जग जाना।
कहाँ तक महिमा उनकी करें जगत ने उनको पहिचाना।।४६।।

परमसुख भोगें नन्तानन्त अनन्तानन्त काल तक वे।
अरे अपने में ही थिर रहें अनन्तानन्त काल तक वे।।
अनन्त दर्शन अनन्त वीरज अनन्तानन्त ज्ञानमय वे।
भरत भगवन्त हो गये सिद्ध स्वयं में ही हैं सबकुछ वे।।४७।।

पाँच सौ छयासठ छन्दों का ग्रन्थ यह इसमें अन्तर्द्वन्द्व।
भरत के अन्तर का यह द्वन्द्व ज्ञानियों का है अन्तर्द्वन्द्व।।
भरत के जीवन की यह कथा सभी को प्रेरित करती है।
'आतमा को भूलो मत कभी' – बात यह सबसे कहती है।।४८।।

(दोहा)

इसप्रकार पूरा हुआ, भरत का अन्तर्द्वन्द्व।
सब द्वन्द्वों से पार हो, हुए सिद्ध भगवन्त।।४९।।

उनका पावन चरित यह, पढे-सुने जो कोय।
परम शान्ति को प्राप्त हो, दुविधा रहे न कोय।।५०।।

अरे चित्त की शान्ति ही, है जीवन का सार।
इसे प्राप्त कर जीव सब, होते भव से पार।।५१।।

(सोरठा)

सत्ताईस जुलाइ, मोक्ष सप्तमी के दिना।
सोमवार सन् बीस, को यह पूरण हुआ है।।५२।।

– ● –

छहढाला प्रवचन

पाँच सङ्किति

अन्तर चतुर्दश भेद, बाहिर संग दसधा तैं टलैं।
परमाद तजि, चौकर मही लखि समिति ईर्या तैं चलैं।।
जग सुहितकर सब अहितहर, श्रुति सुखद सब संशय हरें।
भ्रमरोगहर जिनके वचन मुखचन्द्र तैं अमृत झरैं।।२।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला की छठवीं ढाल पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

मुनिराजों के पाँच महाव्रत, पाँच समिति, पाँच इन्द्रियविजय, छह आवश्यक और शेष सात गुण - इसप्रकार २८ मूलगुण होते हैं। इनका वर्णन छठवीं ढाल में निम्नानुसार किया गया है।

अहिंसादि पाँच महाव्रतों का वर्णन प्रथम छन्द में तथा द्वितीय छन्द की प्रथम पंक्ति में किया गया है।

ईर्या आदि पाँच समितियों में से ईर्या एवं भाषा समिति का वर्णन द्वितीय छन्द की तीन पंक्तियों में और एषणा, आदान-निक्षेपण और प्रतिष्ठापना समिति का वर्णन तीसरे छन्द में किया गया है।

पाँच इन्द्रियविजय का वर्णन चौथे छन्द में किया गया है।

छह आवश्यकों का वर्णन पाँचवें छन्द की दो पंक्तियों में किया है।

शेष सात मूलगुणों अर्थात् अस्नान, अदंतधोवन, अचलेकता, भूमिशयन, दिन में एकबार आहार ग्रहण, खडे होकर आहार ग्रहण और केंशलोच का वर्णन पाँचवे और छठवें छन्द में किया गया है।

देखो! भगवान महावीर का जीव जब सिंह पर्याय में था, तब दो मुनिराजों ने आकाश से उतरकर उपदेश दिया था। उनकी शान्त चेष्टा देखकर सिंह मुग्ध हो जाता है और उनकी भाषा भी समझ जाता है। उसे लगता है कि अहो! मुनिराज मुझे वीतरागी चैतन्यतत्त्व सुना रहे हैं, यह मेरे हित की कोई अपूर्व बात है। यह मुनिराज मेरे परम हितैषी हैं। वह सिंह मुनिराज की भाषा समझ जाता है और उनका शान्त भाव भी समझ जाता है तथा उसी समय भ्रम दूर करके सम्यग्दर्शन प्राप्त कर लेता है।

अहा! मुनिराज के वचन कैसे होंगे? वे वचन अन्तर में शान्तरस के अनुभव में से आते हैं, इसलिए उनमें से भी शान्त रस झरता है।

श्रीमद् राजचन्द्रजी ने भी कहा है –

वचनामृत वीतराग के, परम शान्त रस मूल।
औषधि जो भवरोग की, कायर को प्रतिकूल।।

जिसे जिनवचन नहीं रुचते, जिनवचन सुनकर जिसका पुरुषार्थ नहीं जगता, उसे कायर कहा है। अहो! मुनिराज के वचन भी जिनवचन हैं, वे आत्मा को जगाकर परम शान्तरस का अनुभव करानेवाले हैं। उनके वचन भवरोग दूर करनेवाली औषधि है। यहाँ छहढाला में मुनिराज के वचनों को भ्रमरोग हरण करनेवाले कहा है। श्रीमद् राजचन्द्रजी ने भी उन्हें भवरोग की औषधि कहा है। जिनवचन आत्मभ्रान्तिरूपी महारोग को दूर करनेवाली अमोघ औषधि है। औषधि भले अमोघ हो, परन्तु रोग तो औषधि को खाने पर ही मिटता है। उसीप्रकार जिनवचनों को सुनकर अन्दर उतारने पर, उनका विचार करके भाव समझने पर ही भवरोग मिटता है। जो जिनवचन सुनने की फुरसत ही नहीं निकालता, उन पर विचार भी नहीं करता तो उसे लाभ कैसे होगा? इसीलिए कहा है 'कर विचार तो पाम'। ज्ञानियों ने कहने में कोई कसर नहीं रखी, परन्तु इस जीव ने उन पर लक्ष्य नहीं किया, इसलिए इसे आत्मज्ञान नहीं हुआ।

अहो! मुनिराज के वचन तो तत्काल बोधक हैं, उनका भाव समझने पर उसी क्षण आत्मबोध हो जाता है – ऐसे मधुर वचन मुनिराज के श्रीमुख से झरते हैं। अन्तर में वीतरागी आनन्द में झूलनेवाले मुनिराज जब बोलते हैं तब ऐसा लगता है कि उनके मुख से आनन्द झर रहा हो। विदेहक्षेत्र में जाकर सीमंधर भगवान की वाणी साक्षात् सुननेवाले कुन्दकुन्दाचार्यदेव ने पंचास्तिकाय के मंगलाचरण में जिनेन्द्र भगवान को नमस्कार करते हुए उन्हें रागादि दोष रहित, निर्मल और अत्यन्त मधुरवाणी वाला कहा है। इसीप्रकार मुनिराज की वाणी भी अमृत बरसानेवाली और जगत का हित करनेवाली अर्थात् 'जग सुहितकर' है।

मुनियों की वाणी मीठी होती है, उसमें कटुता नहीं होती। मुनिराज चाहे जैसी तुच्छ भाषा नहीं बोलते; उनकी भाषा तो शान्त रसमयी, गम्भीर, प्रयोजनगर्भित होती है। उसे सुनते ही संशय मिट जाता है, विषयों का रस छूट जाता है और जीव चैतन्यरस का अमृतपान करके तृप्त हो जाता है। जिसप्रकार चन्द्रमा में से शीतल अमृत झरता है, उसीप्रकार मुनिराज के मुखरूपी चन्द्रमा में से परम शान्तरस का अमृत झरता है, जिससे भव का क्लेश मिट जाता है।

देखो! मोक्षमार्गी मुनिराजों की भाषा समिति कैसी अलौकिक होती है। हे भव्यजीवों! तुम अपने वीतरागी आनन्द स्वभाव से भरपूर आत्मा का आश्रय करो, तुम्हें परम आनन्द होगा। तुम अनन्त गुणों से भरपूर हो, सिद्ध समान परमात्मा हो – ऐसी प्रतीति करो, श्रद्धा करो, अनुभव करो; तुम्हें उत्तम सुख होगा, तुम्हारा कल्याण होगा। ऐसी मधुरवाणी मुनिराज के श्रीमुख से झरती है। अहा! जो वाणी आत्मा को भगवान कहकर बुलाती है, उसकी मिठास की क्या बात? तीर्थंकरों द्वारा प्रसिद्ध किये गये मोक्षमार्ग को बतानेवाली है, जीवों को क्रोधादि कषायों से छुडाकर मोक्षमार्ग में लगाती है, भवरोग को मिटाती है और मोक्षसुख को चखाती है। **(क्रमशः)**

नियमसार प्रवचन –

कारण समयसार

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के परमार्थप्रतिक्रमणाधिकार की गाथा ९७ पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। गाथा मूलत: इसप्रकार हैं –

णियभावं णवि मुच्चइ परभावं णेव गेण्हए केइ।
जाणदि पस्सदि सव्वं सो हं इदि चिंतए णाणी।।९७।।

(हरिगीत)

ज्ञानी विचारें देखे-जाने जो सभी को मैं वही।
जो ना ग्रहे परभाव को निज भाव को छोड़े नहीं।।९७।।

ज्ञानी चिंतवन करता है कि जो निजभाव को नहीं छोड़ता, किंचित् भी परभाव को ग्रहण नहीं करता, सर्व को जानता-देखता है; वह मैं हूँ।

(गतांक से आगे....)

इसीप्रकार श्री पूज्यपादस्वामी ने समाधितंत्र के २० वें श्लोक द्वारा कहा है कि –

(अनुष्टुभ्)

यदग्राह्यं न गृह्णाति गृहीतं नापि मुंचति।
जानाति सर्वथा सर्वं तत्स्वसंवेद्यमस्म्यहम्।।४९।।

(हरिगीत)

जो गृहीत को छोड़े नहीं पर न ग्रहे अग्राह्य को।
जाने सभी को मैं वही है स्वानुभूति गम्य जो।।४९।।

श्लोकार्थ :- जो अग्राह्य को (-ग्रहण न करने योग्य को) ग्रहण

नहीं करता तथा ग्रहीत को (-ग्राह्य को, शाश्वत स्वभाव को) छोड़ता नहीं है, सर्व को सर्व प्रकार से जानता है, वह स्वसंवेद्य (तत्त्व) मैं हूँ।

यह निश्चय-प्रत्याख्यान अधिकार है। प्रत्याख्यान का अर्थ है विकार का त्याग। विकार का त्याग होने पर अविकारी दशा प्रगट होना चाहिए। विकार में से अविकारी दशा प्रगट नहीं होती; अविकारी दशा तो अविकारी गुणों में से परिपूर्ण ध्रुव पिण्ड में से प्रगट होती है अर्थात् ध्रुव चैतन्यस्वरूप के आश्रय से ही सच्चा प्रत्याख्यान होता है। जिसे दोषों का प्रत्याख्यान करना हो, निर्दोषता प्रगट करनी हो; उसे त्रिकाल चैतन्यस्वभाव की प्रतीति और उसमें एकाग्रता करनी चाहिए, उसके बिना प्रत्याख्यान नहीं हो सकता।

मैं स्वयं निर्दोषस्वभाव का निधान हूँ - ऐसी प्रतीति किए बिना निर्दोषता कहाँ से आएगी? आत्मा शाश्वत निर्दोषस्वभावी है। अनादि से पर्याय में सदोषता है, ध्रुवतत्त्व के आश्रय से वह दोष टलकर निर्दोषता हो सकती है। इसप्रकार उत्पाद-व्यय-ध्रुव - तीनों इसमें आ जाते हैं। वस्तु के उत्पाद-व्यय-ध्रुव को स्वतंत्र न माने तो उसे दोष टालकर निर्दोषता करना शेष नहीं रहता।

(अब, गाथा ९७ वीं की टीका पूर्ण करते हुए टीकाकार मुनिराज चार श्लोक कहते हैं)

(वसंततिलका)

आत्मानमात्मनि निजात्मगुणाढ्यमात्मा
जानाति पश्यति च पंचमभावमेकम्।
तत्याज नैव सहजं परभावमन्यं
गृह्णाति नैव खलु पौद्गलिकं विकारम्॥१२९॥

(हरिगीत)

आतमा में आतमा को जानता है देखता।
बस एक पंचमभाव है जो नंतगुणमय आतमा॥
उस आतमा ने आजतक छोड़ा न पंचमभाव को।
और जो न ग्रहण करता पुद्गलिक परभाव को॥१२९॥

श्लोकार्थ – आत्मा, आत्मा में निज आत्मिक गुणों से समृद्ध आत्मा को एक पंचमभावरूप जानता है और देखता है; उस सहज एक पंचमभाव को उसने छोड़ा नहीं है तथा अन्य ऐसे परभाव को कि जो वास्तव में पौद्गलिक विकार है उसे वह ग्रहण नहीं करता है।

आत्मा आत्मा में निज आत्मिक गुणों से समृद्ध आत्मा को जानता-देखता है। ज्ञान के अन्तर्मुख होने पर जो निर्मलदशा प्रगट हुई, वह स्वयं अपने को जानती है और ध्रुवस्वभाव परमपारिणामिकभावरूप आत्मा को भी जानती है। त्रिकाली द्रव्य को प्रतीति में लेनेवाली पर्याय है। जिस पर्याय ने त्रिकाली को प्रतीति में लिया है; वह पर्याय स्वयं अपने को भी जानती है, वह अपने से अजान रहकर द्रव्य को नहीं जानती। पर्याय अपने से अनजान रहे और द्रव्य का ज्ञान कर ले – ऐसा नहीं होता। निर्दोष प्रगट होनेवाली पर्याय स्वयं अपने को जानती है और अखण्ड द्रव्य को भी जानती है। कोई दूसरा ईश्वर इस आत्मा के दोष को टालने नहीं आता; किन्तु आत्मा स्वयं ही ध्रुवशक्ति से भरपूर परमेश्वर है, उसकी सेवा से दोष टल जाते हैं। **(क्रमशः)**

संयोगों और पर्यायों की अनित्यता को जब हम अपनी मिथ्या मान्यताओं और राग-द्वेष के चश्मे से देखते हैं तो वह दुःखकर प्रतीत होती है, यदि सम्यग्ज्ञान के आलोक में देखें तो वस्तु का स्वभाव होने से शान्ति और सुखोत्पादक ही प्रतीत होंगी। **– चिन्तन की गहराईयाँ, पृष्ठ १११**

समयसार की ४७ शक्तियों पर प्रवचन

सर्वज्ञत्व शक्ति

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी द्वारा समयसार की ४७ शक्तियों पर किये गये प्रवचनों को यहाँ पाठकों के लाभार्थ क्रमशः प्रकाशित किया जा रहा है।

(गतांक से आगे....)

परमचारित्ररूप पूर्णवीतरागदशा प्रगट होते ही पूर्ण अकषायरूप शांतरस का वेदन होता है। भगवान निजानन्दरसलीन हैं। यह 'परिणमता' शब्द का विस्तार है। भाई! तेरा स्वभाव भी पूर्ण वीतरागता और सर्वज्ञता से भरा हुआ है। अन्दर देख तो सही, अन्दर देखते ही हालत सुधर जायेगी। अभी भले ही पर्याय में सर्वज्ञता प्रगटी नहीं है; परन्तु अल्पकाल में सर्वज्ञपद प्रगट होगा - ऐसी प्रतीति चौथे गुणस्थान में सम्यग्दृष्टि को हो जाती है। **अरे भाई! दोज हुई है तो पूनम भी होगी ही होगी।**

भगवान आत्मा शरीर के रजकणों से भिन्न, अचेतनकर्म से भिन्न, पुण्य-पापरूप सब भावकर्मों से भिन्न अल्पज्ञ दशा से भी भिन्न अखण्ड, एकरूप सर्वज्ञस्वरूप वस्तु हैं; वह स्वानुभूति में प्राप्त अवश्य होती है; परन्तु राग, व्यवहार या व्यवहाररत्नत्रय के शुभ विकल्पों से प्राप्त होने योग्य वस्तु का स्वभाव ही नहीं। स्वानुभूति अपने से उत्पन्न होती है, इसमें पर की कोई अपेक्षा नहीं; गजब की बात है।

अरे भाई! तू कौन है? तेरे स्वरूप की तुझे खबर नहीं है। समयसार की जयसेनाचार्य कृत टीका में आता है कि - कोई एक गुण भी यथार्थ समझ में आ जाय तो समस्त वस्तु का यथार्थ ज्ञान हो जाता है।

आहाहा...! द्रव्य-गुण-पर्याय, सर्वदर्शित्वशक्ति, सर्वज्ञत्वशक्ति इत्यादि कोई एक भाव (गुण) भी भलीप्रकार लक्ष्य में आ जाये तो समस्त वस्तु लक्ष्यगत हो जाती है। आत्मज्ञानमयी और सर्वज्ञत्व - ये दो चीजें नहीं हैं, दोनों एक ही चीज हैं।

आत्मज्ञानमयी सर्वज्ञत्वशक्ति तो निश्चय है और वह लोकालोक को जानती है - ऐसा विवक्षाभेद करना ही व्यवहार है। यहाँ शक्ति के प्रकरण में निश्चय ही मुख्य है।

कोई कहता है कि आप भगवान होने की वकालत करते हो; परन्तु भाई! यह भिन्न जाति की वकालत है, भगवान होने की वकालत है। **तू स्वयं भगवानस्वरूप है, उसे पर्याय में प्रकट करनेवाली यह बात है।**

प्रथम कलश में बहुत अच्छी बात आयी थी कि - एक समय में युगपद् प्रत्यक्षरूप से जाननशील जो कोई शुद्धजीव वस्तु हैं, उसे मेरा नमस्कार हो। शुद्ध जीव को सारपना घटित होता है। सार अर्थात् हितकारी असार अर्थात् अहितकारी। हितकारी को सुख जानो और अहितकारी को दुःख; क्योंकि अजीव पदार्थ अर्थात् पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल को और संसारी जीव को सुख नहीं है, ज्ञान भी नहीं है तथा उनके स्वरूप को जाननेवाले जीव को भी सुख नहीं है, ज्ञान भी नहीं है।

इसलिए **परमाणु से लेकर शरीर, मन, वाणी, पैसा, स्त्री का शरीर इत्यादि चीजों में सुख नहीं है, ज्ञान भी नहीं है।** निगोद के अनन्त जीव हैं, उन्हें भी पर्याय में सुख नहीं है और ज्ञान भी नहीं है। यह शक्ति की बात नहीं है। **शक्ति की अपेक्षा तो जीव मात्र सुखी एवं ज्ञानी है।** निगोद के अनन्त जीवों को और शरीरादि परमाणु स्कन्धों को जाननेवाले जीव को भी सुख एवं ज्ञान नहीं है।

आहाहा...! संसारीप्राणी निगोद आदि के अनन्त जीव, जो मलिन भाव से पर्याय में परिणमित हो रहे हैं; उन्हें प्रकट दशा में सुख नहीं है और ज्ञान नहीं है। वस्तु में त्रिकाल सुख-स्वभाव और ज्ञान स्वभाव है। उसकी यहाँ बात नहीं है। यहाँ तो कहते हैं कि **जो अज्ञानी जीव निगोद आदि संसारी जीवों को जानता है, उसे सुख नहीं है और ज्ञान भी नहीं है।** आहाहा...! राजमलजी ने गजब की टीका की है। निगोद आदि संसारी जीवों को तो पर्याय में सुख नहीं है, परन्तु उनको जाननेवाले को भी सुख और ज्ञान नहीं है। गजब बात है भाई!

शुद्ध चैतन्यस्वरूप भगवान आत्मा पूर्णानन्द का नाथ प्रभु है और सिद्ध परमात्मा शुद्ध जीव हैं। उन दोनों को सुख भी है, ज्ञान भी है और उनको जाननेवाले जीव को भी सुख है और ज्ञान है; परन्तु जीव को **जाना कब कहा जाय?** भगवान सिद्ध परमात्मा जिसप्रकार शुद्ध हैं; उसीप्रकार मेरा भगवान आत्मा भी त्रिकाल शुद्ध है।

आहाहा! **'सिद्ध समान सदा पर मेरो' इस त्रिकाली शुद्ध की दृष्टिपूर्वक परिणमन करने से, स्वद्रव्य के सन्मुख** होकर उसके आश्रय से, स्वानुभवदशा प्रकट होती है, निर्मल श्रद्धान-ज्ञान प्रकट होता है और साथ में अतीन्द्रिय सुख के आस्वादरूप दशा भी प्रकट होती है।

नाटक समयसार में आता है कि -

वस्तु विचारत ध्यावतैं, मन पावै विश्राम।
रसस्वादत सुख ऊपजै, अनुभव ताको नाम।।

स्वानुभव की दशा प्रकट होती है, तब शुद्ध को जाना कहा जाता है। शुद्ध जीव में सुख है, ज्ञान है; अत: उसे जाननेवाले को भी सुख-ज्ञान है।

सिद्ध को जानने से सुख है या नहीं? हाँ! सिद्ध को जानने से सुख

है; परन्तु सिद्ध को जाना कब कहा जाय कि स्वयं का स्वभाव सदा सिद्ध समान शुद्ध है – ऐसा निश्चय करके स्वभावसन्मुख होकर उसका अनुभव तथा प्रतीति करे, तब सिद्ध को जाना – ऐसा कहा जाय। साथ ही साथ उसमें लीन होने से अतीन्द्रिय सुख का आस्वाद भी आता है।

इसमें स्वद्रव्य को जानने की क्या आवश्यकता है? अरे भाई! परद्रव्य को जाना ङ्गह तो विकल्प है और विकल्प तो दुःख ही है।

मोक्षपाहुड़ की सोलहवीं गाथा में आचार्यदेव कहते हैं कि –

'परदव्वादो दुग्गइ' स्वद्रव्य के अलावा अन्य द्रव्य पर तुम्हारा लक्ष्य जायेगा तो नियम से विकल्प उत्पन्न होगा और उससे दुःख ही होगा।

आहाहा...! मेरी पर्याय में सर्वज्ञता नहीं है और भगवान की पर्याय में सर्वज्ञपना प्रकट है। वह सर्वज्ञपना पर को जानने से प्रकट नहीं हुआ है, अतः **पर को जानने की इच्छा से विराम लेकर स्वस्वरूप के आश्रय से परिणमन करो, उसी में रम जाओ, उसी में स्थिर एवं लीन हो जाओ – यही सर्वज्ञ होने का मार्ग है।** इसप्रकार यह सर्वज्ञत्वशक्ति पूरी हुई। ●

आत्मोन्मुखी कौन?

आत्मा के अनन्त गुणों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण गुण श्रद्धा है। शेष समस्त गुण तो श्रद्धा का अनुसरण करते हैं। एक प्रकार से रुचि श्रद्धा का ही दूसरा नाम है। परपदार्थों से भिन्न अपनी आत्मा की रुचि ही सम्यक्-श्रद्धा है और निजात्मा से भिन्न परपदार्थों की रुचि ही मिथ्या-श्रद्धा।

बल रुचि का अनुसरण करता है; अत: बल वहीं पड़ता है, जहाँ रुचि होती है। अनन्त गुणों का बल उसी दिशा में कार्य करता है, जहाँ रुचि हो। यही कारण है कि आत्मरुचिवान व्यक्ति आत्मोन्मुखी हो जाता है और पर-रुचि वाला परोन्मुखी। **– चिन्तन की गहराईयाँ, पृष्ठ १२**

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

भेदविज्ञान

प्रश्न : इष्टोपदेश में आता है कि जीव और देह को जुदा जानना ही बारह अंग का सार है – इसका क्या अर्थ है?

उत्तर : जीव और देह (पुद्गल) को जुदा जाने अर्थात् विकार भी आत्मा के स्वभाव से जुदा है, यह भी उसमें गर्भित है। पुद्गल और विकार से भिन्न आत्मा के स्वभाव को जानना, अनुभव करना ही द्वादशांग का सार है। द्वादशांग में आत्मानुभूति करने को कहा गया है।

प्रश्न : भेदज्ञान का क्या अर्थ है?

उत्तर : आत्मा उपयोगस्वरूप है, रागादि परभावों से भिन्न है – इसप्रकार उपयोग और रागादि को सर्वप्रकार से अत्यन्त भिन्न जानकर, राग से भिन्नत्वरूप और उपयोग से एकत्वरूप ज्ञान का परिणमन भेदज्ञान है।

प्रश्न : भेदज्ञानी क्या करता है?

उत्तर : भेदज्ञानी धर्मात्मा अपने भेदज्ञानशक्ति से निज महिमा में लीन होता है। वह रागरूप किंचितमात्र भी नहीं परिणमता, ज्ञानरूप ही रहता है।

प्रश्न : जैसे ज्ञानी को शरीर भिन्न दिखता है, वैसे रागादि भिन्न दिखते हैं क्या?

उत्तर : ज्ञानी को रागादि शरीर के जैसे ही भिन्न दिखते हैं, अत्यन्त भिन्न दिखते है।

प्रश्न : शरीर को आत्मा से भिन्न कहा, यह तो ठीक है, जँचता भी है; परन्तु राग आत्मा से भिन्न है, यह गले उतरना कठिन लगता है?

उत्तर : चैतन्य में अन्दर गया अर्थात् पुण्य-पापभाव का साक्षी हो गया, तब वह भाव से भिन्न है, काल से भिन्न है और क्षेत्र से भी भिन्न है; वस्तु भिन्न ही है, आत्मा तो अकेला ज्ञानघन चैतन्यपुंज ही है।

प्रश्न : सुख-दु:ख की कल्पना जीव में होती हुई दिखाई देती है, तथापि समयसार में उस कल्पना को पुद्गलद्रव्य का परिणाम क्यों कहा?

उत्तर : सुख-दु:ख, हर्ष-शोक आदि जीव की पर्याय में होते हैं, परन्तु जिसको द्रव्यदृष्टि प्रकट हुई है - ऐसे ज्ञानी जीव की दृष्टि तो द्रव्य के ऊपर पड़ी है, उसकी दृष्टि आत्मा के आनन्द में है। अत: वह जीव सुख-दु:ख की कल्पना को कैसे भोगे? इसलिए ज्ञानी के सुख-दु:ख के राग परिणाम को पुद्गल का परिणाम कहा है और इस सुख-दु:ख के परिणाम के आदि, मध्य और अन्त में अन्तर्व्यापक होकर पुद्गलद्रव्य उसको ग्रहण करता है, भगवान आत्मा उसको ग्रहण करता अथवा भोगता नहीं है। आत्मा का स्वरूप तो ज्ञायक है, कल्पना के सुख-दु:ख को भोगना उसका स्वरूप नहीं है। पर्याय के सुख-दु:ख की कल्पना होती है; किन्तु दृष्टिवन्त ज्ञानी उसका कर्ता-भोक्ता नहीं है।

प्रश्न : धर्मात्मा रागरूप नहीं परिणमता - इसका अर्थ क्या? उसे राग तो होता है न?

उत्तर : राग होने पर भी उसे राग में एकत्वबुद्धि नहीं होती अर्थात् राग के साथ आत्मा की एकतारूप वह नहीं परिणमता, किन्तु राग से भिन्नपने ही परिणमता है। **(क्रमश:)**

आत्मा के स्वभाव को जानना, अनुभव करना ही द्वादशांग का सार है।

समाचार दर्शन -

ए-बाल संस्कार शिविरों द्वारा महती धर्मप्रभावना

(१) कानपुर (उ.प्र.) : सर्वोदय अहिंसा ट्रस्ट, जयपुर के निर्देशन में दिगम्बर जैनाचार्य कुन्दकुन्द स्मारक ट्रस्ट, कानपुर के अन्तर्गत २१ वाँ वीर बाल-युवा संस्कार शिक्षण शिविर दि. १३ से २० जून, २१ तक विभिन्न आयोजनों के साथ सम्पन्न हुआ।

शिविर में प्रतिदिन डॉ. संजीवकुमारजी गोधा द्वारा प्रेरक प्रसंग एवं पण्डित संजयजी कोटा द्वारा आयोजित संस्कार कक्षा सम्पूर्ण शिविर के आकर्षण का केन्द्रबिन्दु रहें।

साथ ही विशेषरूपसे पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर पण्डित विपिनजी नागपुर, पण्डित सुनीलजी राजकोट, पण्डित विरागजी जबलपुर, पण्डित धर्मेन्द्रजी कोटा, पण्डित अभयजी खैरागढ, डॉ. मनीषजी मेरठ, पण्डित ज्ञायकजी मुम्बई का समागम मिला। शिविर संचालन पण्डित संजयजी कोटा एवं पण्डित समकितजी शास्त्री, खनियांधाना ने किया।

(२) दिल्ली : यहाँ जैनिजम थिंकर संस्थान एवं सहयोगी संस्थाओं के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक १४ से २२ जून, २०२१ तक संस्कार शिविर का आयोजन हुआ।

सम्पूर्ण शिविर में बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद, पं. अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. वीरसागरजी दिल्ली, डॉ. संजीवजी गोधा जयपुर, डॉ. दीपकजी वैद्य जयपुर, पं. सुनीलजी जैनापुरे राजकोट, पं. जे.पी. दोशी मुम्बई, पं. मुकेशजी तन्मय विदिशा, पं. संजयजी कोटा, पं. विरागजी शास्त्री जबलपुर, पं. खेमचन्दजी उदयपुर, विदुषी राजकुमारजी दिल्ली, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ, पं. विपिनजी शास्त्री नागपुर, डॉ. प्रवीणजी शास्त्री बांसवाडा, पं. अशोकजी मांगूलकर राधौगढ, पं. अशोकजी शास्त्री उज्जैन, पं. भूपेन्द्रजी शास्त्री विदिशा आदि अनेक विद्वानों का सान्निध्य प्राप्त हुआ।

(३) पिडावा (राज.) : यहाँ श्रुतपंचमी महापर्व के अवसर पर दिनांक ११ से १६ जून, २१ तक श्री नवलब्धि मण्डल विधान एवं शिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ।

सम्पूर्ण शिविर में अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, ब्र. हेमन्तभाई गांधी सोनगढ, पण्डित विमलदादा झांझरी उज्जैन, ब्र. जतीशभाईजी

शास्त्री सनावद, पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित देवेन्द्रजी बिजौलियाँ, पण्डित रजनीभाईजी हिम्मतनगर, पण्डित शैलेषभाई तलोद, पण्डित नीलेशभाईजी मुम्बई, पण्डित प्रदीपजी मानोरिया अशोकनगर, डॉ. मनीषजी मेरठ, पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री मुम्बई आदि अनेक विद्वानों के समागम मिला।

साथ ही प्रतिदिन युवा ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के मंगल प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। विधि-विधान के कार्य पण्डित मनीषजी पिडावा ने सम्पन्न कराये। शिविर के अन्तर्गत डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री, उदयपुर एवं पण्डित श्री देवेन्द्रजी, बिजौलियाँ को समयसार साधक सम्मान से सम्मानित किया गया।

शिविर का उद्घाटन श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ एवं समापन समारोह श्री अशोकजी इन्दौर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

सम्पूर्ण शिविर पं. विरागजी शास्त्री के निर्देशन में पं. नगेशजी जैन पिडावा, पं. अमितजी मडावरा, श्री राकेशजी 'प्रेमी' पिडावा के संयोजन में सम्पन्न हुआ।

(४) सिद्धायतन(द्रोणगिरि-म.प्र.) : तीर्थधाम सिद्धायतन, द्रोणगिरि के तत्त्वावधान में दिनांक १५ से २० जून, २१ तक संस्कार शिविर का आयोजन हुआ।

शिविर में प्रतिदिन प्रात: गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के छहढाला ग्रंथ पर विडियो प्रवचन प्रसारित हुए। साथ ही पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित विरागजी शास्त्री, जबलपुर का सान्निध्य मिला।

रात्रि में पण्डित निखिलजी शास्त्री द्वारा महापुरुषों के जीवन प्रसंग पर प्रस्तुति हुई तथा विशेष कक्षाएँ पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, पण्डित अनुभवजी करेली, पण्डित ऋषभजी शास्त्री दिल्ली द्वारा ली गई। ज्ञानवर्धक सांस्कृतिक कार्यक्रम पण्डित संजयजी जैन सिद्धार्थी इन्दौर के संयोजन में सम्पन्न हुये। सभी कार्यक्रम पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री के निर्देशन एवं पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री, आगरा के मुख्य संयोजकत्व में सम्पन्न हुये।

(५) ज्ञानोदय (भोपाल-म.प्र.) : तीर्थधाम ज्ञानायतन भोपाल के तत्त्वावधान में दिनांक १७ से २२ जून, २१ तक ई-संस्कार शिविर हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, बाल ब्र. हेमचन्दजी 'हेम'

भोपाल, पं. राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर, पं. मुकेशजी शास्त्री विदिशा, पं. विरागजी शास्त्री जबलपुर, पं. चिन्मयजी बडकुल, विदिशा का सान्निध्य प्राप्त हुआ।

प्रतिदिन सायंकाल श्री जिनेन्द्रभक्ति के उपरान्त पं. संजयजी शास्त्री, कोटा द्वारा ली गई कक्षा संस्कारों की पाठशाला विशेष आकर्षण का केन्द्रबिन्दु रहीं।

सामुहिक कक्षायें पण्डित सुनीलजी शास्त्री राजकोट, ब्र. अमितजी विदिशा, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित निखिलजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित शुभमजी शास्त्री भोपाल द्वारा ली गई। सम्पूर्ण कार्यक्रम डॉ. महेशजी शास्त्री एवं पण्डित रतनजी शास्त्री, के निर्देशन में सम्पन्न हुये।

(६) कोटा (राज.) : श्री कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट एवं सिद्धम् पाठशाला, कोटा के तत्त्वावधान एवं मुमुक्ष मण्डल, कोटा के सहयोग से दिनांक २३ जून से २८ जून, २१ तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

प्रतिदिन प्रात: पंचपरमेष्ठी विधान, दोपहर में गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के मंगल विडियो प्रवचन तथा सायंकाल आनंद यात्रा कीर्तन का विशेष लाभ प्राप्त हुआ।

सामुहिक कक्षाओं में डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित संजयजी कोटा, पण्डित जे.पी. दोशी मुम्बई, पण्डित एस.पी. भारिल्ल जयपुर, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, पण्डित प्रवीणजी शास्त्री बांसवाडा का लाभ मिला। सम्पूर्ण शिविर पण्डित संजयजी शास्त्री, कोटा एवं पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री, कोटा के निर्देशन में स्थानीय विद्वानों के सहयोग से सम्पन्न हुआ।

(७) इन्दौर (म.प्र.) : श्री दि. जैन कुन्दकुन्द परमागम ट्रस्ट साधनानगर, इन्दौर के तत्त्वावधान में दिनांक २४ से २९ जून, २१ तक शिविर का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर बाल ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना एवं पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन जबलपुर के मंगल व्याख्यानों का लाभ प्राप्त हुआ।

विशेष सामुहिक कक्षा पं. एस.पी.भारिल्ल, पं. अशोकजी शास्त्री, पं. विरागजी शास्त्री, पं. मनीषजी शास्त्री, पं. धर्मेन्द्रजी शास्त्री, पं. सौरभजी शास्त्री, पं. रीतेशजी शास्त्री, श्री राजेशजी काला, पं. अनुभवजी जैन द्वारा ली गई।

सम्पूर्ण शिविर श्री विजयजी बडजात्या एवं श्री पदमजी पहाडिया इन्दौर के निर्देशन में श्री निलेशजी जैन, श्री भावेश जैन के तकनीकि सहयोग से सम्पन्न हुआ।

२३ वाँ ऑनलाईन शिक्षण-शिविर सानन्द सम्पन्न

जैन अध्यात्म अॅकेडमी ऑफ नार्थ अमेरिका **(JAANA)** के तत्त्वावधान में कहान समयसार सम्प्राप्ति शताब्दि वर्ष के पावन अवसर पर दि. १ से ६ जुलाई तक २३ वाँ ऑनलाईन शिविर समयसार व्याख्यानमाला के रूप में सम्पन्न हुआ।

शिविर में प्रतिदिन अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के समयसार का सार विषय पर सारगर्भित व्याख्यानों का लाभ प्राप्त हुआ।

इसके अलावा प्रात:कालीन सत्र में युवा तार्किक विद्वान डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के संवर अधिकार एवं पण्डित बिपिनजी शास्त्री, मुम्बई के सर्वविशुद्ध ज्ञानाधिकार पर व्याख्यान हुये। रात्रिकालीन सत्र में पण्डित विपिनजी शास्त्री, नागपुर के बंधाधिकार एवं श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल के गाथा ६९-७१ पर मंगल व्याख्यान हुये।

* विशेष ज्ञातव्य है कि २१ वें द्विवार्षिक जैना कन्वेन्शन के प्रसंग पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का मंगल आशीर्वाद मिला एवं ६ जुलाई, २०२१ को डॉ. संजीवकुमारजी गोधा का द्रव्य-गुण-पर्याय विषय पर विशेष व्याख्यान हुआ।

मोक्षमार्गप्रकाशक ४२२ प्रवचनों में सम्पन्न

अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त युवा तार्किक विद्वान डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के प्रतिदिन प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रंथ पर शब्दश: चले रहे मंगल प्रवचन सानन्द सम्पन्न हुये। ज्ञातव्य है कि १२ मार्च २०२० से प्रारंभ यह प्रवचन १२ जुलाई २०२१ को पूर्ण हुये। ४२२ प्रवचनों की इस श्रृंखला का देश-विदेश के हजारों साधर्मियों ने युटयूब के माध्यम से लाईव धर्मलाभ लिया। उक्त सभी विडिओ प्रवचन **Dr. Sanjeev Godha** युट्यूब चैनल पर उपलब्ध है तथा जिनागम के अनेक विषयों पर उपलब्ध प्रवचनों का लाभ भी उक्त चैनल से लिया जा सकता है।

साथ ही प्रतिदिन प्रात: ९.२० **(IST)** बजे से समयसार (ज्ञायकभावप्रबोधिनी टीका) एवं रात्रि में ८.०० **(IST)** बजे से संयमप्रकाश ग्रंथ पर चल रहे प्रवचनों का लाभ युटयूब चैनल के माध्यम से लिया जा सकता है। तत्पश्चात् रात्रि में ही पारस टी.वी. चैनल पर १०.०० बजे धर्म का मर्म (छहढाला) विषय पर व्याख्यानों का लाभ भी लिया जा सकता है।

श्रुतपंचमी महापर्व पर विभिन्न आयोजन

१. जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में श्रुतपंचमी पर्व के पावन प्रसंग पर प्रात: विशेष पूजन के पश्चात् तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रवचन का प्रसारण हुआ। तत्पश्चात् श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर के नवीन सत्र २०२१-२२ का ऑनलाइन भव्य उद्घाटन हुआ। जिसकी अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. शांतिकुमारजी पाटील ने की।

कार्यक्रम में पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, आ. कमलाबाईजी भारिल्ल, डॉ. संजीवजी गोधा, पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. दीपकजी शास्त्री, पण्डित पीयूषजी शास्त्री एवं सभी अध्यापकों ने छात्रों को नव सत्र की शुभकामनाएँ दी। पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने 'ऑनलाइन प्लेटफार्म आपदा नहीं, अवसर है' इस विषय पर उद्बोधन दिया।

अन्त में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का मंगल आशीर्वाद प्राप्त हुआ। सायंकाल श्री जिनेन्द्रभक्ति, छात्र प्रवचन एवं रात्रि में पण्डित पीयूषजी शास्त्री ने मोक्षमार्गप्रकाशक की कक्षा ली। संचालन पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

२. सिद्धायतन (द्रोणगिरि - म.प्र.) : यहाँ प्रात: श्रुतस्कंध विधान के आयोजनपूर्वक तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के विशेष प्रवचन तथा दापेहरकालीन सत्र में आदरणीय बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' के सी.डी.प्रवचन का लाभ मिला।

सायंकालीन सत्र में जिनेन्द्र भक्ति के उपरान्त डॉ. मनीषजी शास्त्री, मेरठ का श्रुतसंरक्षण विषय पर विशेष व्याख्यान का लाभ प्राप्त हुआ।

व्याख्यानोपरान्त पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. वीरसागरजी दिल्ली, डॉ. संजीवजी गोधा जयपुर, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ, पं. अंकुरजी शास्त्री भोपाल द्वारा श्रुतपंचमी पर्व मान्यतायें इस विषय पर परिचर्चा का आयोजन किया गया। संचालन ओजस्वी कवि गणतंत्र जैन, आगरा ने किया।

३. मंगलायतन (उ.प्र.) : यहाँ श्री श्रुतस्कंध विधान का मंगल आयोजन पण्डित विवेकजी जैन एवं पण्डित ऋषभजी शास्त्री, छिन्दवाडा द्वारा कराया गया। उससे पूर्व श्री बाहुबली जिनमन्दिर एवं श्री महावीर मन्दिर में ताम्रपत्र पर श्री षट्खण्डागमजी उत्कीर्ण कराकर विराजमान किये गये।

दोपहर एवं सायंकालीन सत्र में षट्खण्डागमजी पर विशेष गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता बा.ब्र. कल्पनाबहिनजी ने की।

वक्ताओं में पण्डित जे. पी. दोशी मुम्बई, डॉ. संजीवजी गोधा जयपुर, डॉ. जयंतीलालजी जैन, श्रीमती अनुराधाजी कोलकाता, डॉ. विमलाजी नागपुर, डॉ. ममताजी उदयपुर, श्रीमती प्रियंकाजी बैंगलोर, श्रीमती अल्काजी गुना, श्रीमती ज्योतिजी जैन उज्जैन, श्रीमती उषाजी जैन, श्रीमती तिलकमणीजी जैन इन्दौर, कु. आरुषीजी जैन दिल्ली, पण्डित अशोकजी लुहाडिया, पण्डित सुधीरजी शास्त्री, डॉ. सचिन्द्रजी शास्त्री ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर श्री पवनजी जैन, मंगलायतन का भी उद्बोधन प्राप्त हुआ।

४. सिएटल (नॉर्थ अमेरिका) : यहाँ श्रुतपंचमी पर्व के प्रसंग पर जैन सोसायटी ऑफ सिएटल के तत्त्वावधान में विशेष संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

मुख्य प्रवक्ता के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. संजीवकुमारजी गोधा का श्रुतपंचमी पर मार्मिक उद्बोधन प्राप्त हुआ। तथा गोष्ठी मार्गदर्शक के रूप में विदुषी राजकुमारीजी जैन, सनावद का लाभ मिला।

उक्त विषय पर श्रीमती सची जैन मैरिलेण्ड, श्रीमती नीता सेठ डलास, श्री पराग जैन सानफ्रान्सिस्को, श्री नितीन अजमेरा न्यूयॉर्क, श्री संजयजी जैन टोरंटो, श्री अम्बर जैन वेनकुवर, श्री आलोक जैन एवं श्वेता जैन सिएटल ने अपने विषय का रोचक स्पष्टिकरण किया। कार्यक्रम का संयोजन एवं संचालन श्रीमती ऋचा जैन ने किया।

५. पुणे (महा.) : यहाँ परमागम प्रभावना ट्रस्ट पुणे एवं सर्वोदय स्वाध्याय ट्रस्ट, हेरले के तत्त्वावधान में दिनांक १५ जून, २०२१ को श्रुतपंचमी महापर्व के पावन दिवस पर प्रातः श्रुतपंचमी विधान का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर विधान के मध्य श्रुतपरम्परा के महत्त्व को अधोरेखित करते हुए डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, जयपुर के मंगल व्याख्यान का लाभ मिला।

दोपहर सत्र में पण्डित संयमजी देशमाने, कारंजा का पीपीटी के माध्यम से श्रुतकथा पर व्याख्यान तथा रात्रि में श्री जिनेन्द्रभक्ति के उपरान्त पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, देवलाली के मार्मिक प्रवचन का लाभ मिला। पश्चात् कवि सम्मेलन का आयोजन भी किया गया।

वैराग्य समाचार

१. गुना (म.प्र.) निवासी श्री बाबूलालजी बांझल का दिनांक ४ मई, २०२१ को समताभावपूर्वक देहपरिवर्तन हो गया। तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में स्थानीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर आपका योगदान स्तुत्य एवं सदैव स्मरणीय रहेगा। गुना नगर में श्री दि. जैन वीतराग-विज्ञान भवन, श्री दि. जैन मुमुक्षु मण्डल, विशाल स्वाध्याय भवन व जिनमंदिर की स्थापना होना, यह आपकी कर्मठता एवं जुझारू व्यक्तित्व के जीवंत प्रमाण रहे हैं। सेवानिवृत्ति के पश्चात् आपने अपना जीवन स्वाध्याय एवं समाजसेवा हेतु समर्पित किया।

२. रतलाम (म.प्र.) मूलनिवासी पण्डित सिद्धार्थकुमारजी दोशी, कोटा का दिनांक १० जून, २१ को ९५ वर्ष की आयु में शांत परिणामों से देहवियोग हो गया। आदरणीय बाबूजी बहुत ही उत्साही, तत्त्वप्रेमी एवं कविहृदय व्यक्तित्व के धनी थे। समाज के प्रत्येक कार्यक्रम में आप तन-मन-धन से सहयोग हेतु सदा तत्पर रहते थे।

३. जयपुर (राज.) निवासी सुप्रसिद्ध समाजसेवी एवं वरिष्ठ पत्रकार श्री राजेन्द्रकुमारजी गोधा (संपादक - दैनिक समाचार जगत) का दिनांक १९ जून, २०२१ को ७२ वर्ष की आयु में देहपरिवर्तन हो गया। आप सरलस्वभावी, हँसमुख एवं कार्यकुशल व्यक्तित्व के धनी थे। पत्रकारिता के क्षेत्र में आपने अपूर्व कीर्तिमान हासील किया। आप प्रात:कालीन व सायंकालीन दैनिक अखबार 'समाचार जगत' के प्रधान संपादक थे। अनेक पुरस्कारों से आपको समय-समय पर गौरवान्वित भी किया गया था।

४. बैंगलोर (कर्ना.) निवासी श्रीमती शांतिदेवीजी जैन धर्मपत्नी श्री सुरेशचन्दजी जैन का २२ जून २१ को शांतभावपूर्वक देहपरिवर्तन हो गया। आपका जीवन अत्यन्त धर्ममय रहा। आप नियमित स्वाध्याय-सामायिक करती थी। पं. शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल की आप सासूमाँ एवं पं. सर्वज्ञजी भारिल्ल की नानीमाँ थी।

५. नागपुर (महा.) निवासी श्रीमती मोहिनीदेवी जैन धर्मपत्नी श्री विजयकुमारजी जैन का दिनांक २६ जून, २०२१ को समताभावपूर्वक देहपरिर्वतन हो गया। आप सरलहृदय, धर्मरुचिवंत एवं स्वाध्यायी महिला थी। आपने अपनी पाँचों ही बेटियों को अत्यन्त धार्मिक संस्कार दिये। आप पण्डित संजयजी शास्त्री, जयपुर (सर्वोदय अहिंसा), पण्डित विपुलजी मोदी दलपतपुर एवं डॉ. प्रवीणजी शास्त्री बांसवाडा की सासूमाँ थी।

हम आपके परिवारजनों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करते हुए दिवंगत आत्मा शीघ्र ही अभ्युदय की प्राप्ति करें - ऐसी भावना भाते है। - संपादक

।।मंगल आमंत्रण।। ।।अपूर्व अवसर।।

पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट, जयपुर द्वारा

श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर में आयोजित

४४ वाँ वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक ई-शिक्षण शिविर

रविवार, ८ अगस्त से रविवार, १५ अगस्त २०२१ तक

इस शिविर में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा आदि देश के मूर्धन्य एवं विषय-विशेषज्ञ विद्वानों के द्वारा प्रवचन, कक्षाओं के माध्यम से तत्त्वचर्चा का लाभ प्राप्त होगा।

यह शिविर वर्चुअल रहेगा, अत: आप इस आध्यात्मिक ई-शिक्षण शिविर का घर बैठे ही अपने इष्ट-मित्र एवं परिजनों के साथ ऑनलाईन अवश्य धर्मलाभ लेवें।

आप सभी को शिविर का लाभ लेने हेतु हार्दिक आमंत्रण है।

संपर्क सूत्र : ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर- ३०२०१५ (राज) **मो. : ७२९७९७३६६४**

E-mail : ptstjaipur67@gmail.com

नोट – कार्मक्रम का सीधा प्रसारण पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के **Youtube चैनल एवं Zoom App** के माध्यम से किया जायेगा।

कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी शीघ्र ही प्रेषित की जायेगी।

ढाईद्वीप जिनायतन इंदौर में जोधपुर पत्थर के कार्विंग का कार्य पूर्णता की ओर

R.N.I. No. 38278/83 *Postal Regd. No. JaipurCity/421/2021-23*

तीर्थधाम जम्बूद्वीप जिनायतन के बढ़ते चरण...

सम्पादक :

डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., पीएच. डी.

सह-सम्पादक :

डॉ. संजीवकुमार गोधा

एम.ए.द्वय , नेट, एम. फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

प्रकाशक एवं मुद्रक :

ब्र. यशपाल जैन, एम. ए.

द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये जयपुर प्रिंटर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित।

प्रकाशन तिथि : 21 जुलाई 2021

If undelivered please return to -- **Pandit Todarmal Smarak Trust , A-4, Bapu Nagar, Jaipur - 302015**